SHODH PATRA
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
ISSN : 3048-7196, Impact Factor 6.3
Vol. 2, No. 1, Year 2025
Available online : https://shodhpatra.in/

रविदासिया सम्प्रदाय : एक समाजशास्त्रीय विश्लेषणात्मक अध्ययन

राकेश कुमारी, हिंदी विभाग, आई.ई.सी. विश्वविद्यालय, बद्दी, हिमाचल प्रदेश

Email : rakeshkumari10221@gmail.com

सारांश

यह शोध पत्र रविदासिया सम्प्रदाय के सामाजिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पहलुओं का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत करता है। रविदासिया सम्प्रदाय एक ऐसा धार्मिक-सामाजिक आंदोलन है, जिसकी जड़ें संत रविदास की शिक्षाओं में निहित हैं। संत रविदास ने मध्यकालीन भारतीय समाज में व्याप्त जातिवाद, छुआछूत और सामाजिक असमानताओं के विरुद्ध संघर्ष किया। उनका संदेश समाज के शोषित वर्गों को न केवल आध्यात्मिक बल प्रदान करता है, बल्कि सामाजिक चेतना और आत्म-सम्मान का भी बोध कराता है।

यह अध्ययन यह दर्शाता है कि किस प्रकार संत रविदास की शिक्षाओं ने एक व्यापक समुदाय को एकजुट किया और 21वीं सदी में "रविदासिया धर्म" के रूप में एक पृथक धार्मिक पहचान स्थापित की। इस धर्म के अनुयायी मुख्यतः अनुसूचित जातियों से आते हैं, विशेषकर चमार समुदाय से, जो ऐतिहासिक रूप से समाज में हाशिये पर रहे हैं। रविदासिया सम्प्रदाय उनके लिए न केवल भक्ति और ईश्वर-भक्ति का मार्ग है, बल्कि सामाजिक संघर्ष और आत्मसम्मान की लड़ाई का भी प्रतीक है।

शोध में यह भी विश्लेषण किया गया है कि यह धर्म किस प्रकार अपने अनुयायियों को संगठन, शिक्षा, समानता और सामूहिक पहचान की भावना देता है। अमृतबाणी, लंगर सेवा, और सामुदायिक मेलों के माध्यम से इसकी धार्मिक संस्कृति विकसित हुई है।

वर्तमान समय में रविदासिया सम्प्रदाय अनेक सामाजिक और राजनीतिक चुनौतियों का सामना कर रहा है, जिनमें धार्मिक पहचान, सामाजिक भेदभाव और राजनीतिक दोहन प्रमुख हैं। यह शोध इन समस्याओं को उजागर कर उनके संभावित समाधानों की ओर संकेत करता है।

इस प्रकार, यह अध्ययन रविदासिया सम्प्रदाय को केवल एक धार्मिक संप्रदाय नहीं, बल्कि एक सामाजिक न्याय और मानवता आधारित आंदोलन के रूप में प्रस्तुत करता है।

 © Shodh Patra

संकेत शब्द : रविदासिया धर्म, संत रविदास, सामाजिक न्याय, दलित चेतना, धार्मिक पहचान, जातिवाद, अमृतबाणी, सामाजिक समानता, भक्ति आंदोलन, चमार समुदाय।

1. प्रस्तावना

भारत एक बहु-धार्मिक, बहु-जातीय और बहु-सांस्कृतिक देश है, जहां परंपराएं और धार्मिक मान्यताएं समाज की सामाजिक संरचना को गहराई से प्रभावित करती हैं। इसी जटिल सामाजिक ताने-बाने में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है *रविदासिया धर्म*, जो मुख्यतः संत रविदास की शिक्षाओं पर आधारित है। यह धर्म न केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक है, बल्कि दलित चेतना, सामाजिक समरसता और आत्म-सम्मान की भावना का भी संवाहक है। यह शोध प्रस्तावना इस धार्मिक आंदोलन की उत्पत्ति, उद्देश्य और सामाजिक प्रभावों की पृष्ठभूमि में प्रस्तुत की गई है।

संत रविदास (लगभग 1450–1520 ई.) उत्तर भारत के भक्ति आंदोलन के एक अग्रणी संत थे। वे जाति से चमार समुदाय से संबंध रखते थे, जिसे भारतीय समाज में अछूत समझा जाता था। उन्होंने समाज में व्याप्त जातिगत भेदभाव, धार्मिक पाखंड और छुआछूत के विरुद्ध वैचारिक क्रांति का आह्वान किया। उनकी वाणी में मानवतावाद, समानता और भक्ति की भावना प्रमुखता से विद्यमान है। उन्होंने कहा था, "मन चंगा तो कठौती में गंगा", जो इस बात का प्रतीक है कि व्यक्ति की आंतरिक शुद्धता ही सच्चा धर्म है (Sharma, 2002)।

1.1 भक्ति आंदोलन में योगदान

रविदास का योगदान केवल धार्मिक ही नहीं, बल्कि सामाजिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। भक्ति आंदोलन ने मध्यकालीन भारत में जातिवाद और ब्राह्मणवाद के विरोध में समता और समानता की भावना को जन्म दिया। संत कबीर, मीराबाई और गुरु नानक जैसे संतों की पंक्ति में संत रविदास ने भी ग़रीब, वंचित और दलित वर्गों के लिए आध्यात्मिक मुक्ति और सामाजिक अधिकार की बात की (Zelliot, 1992)। उनकी शिक्षाओं में निराकार ईश्वर की उपासना, कर्म और मानवता को प्रधानता दी गई, जो उस समय के धर्म आधारित सामाजिक पाखंड के विरुद्ध था।

1.2 रविदासिया समुदाय का उद्भव

हालांकि संत रविदास की वाणी सिख धर्म के ग्रंथ *गुरु ग्रंथ साहिब* में सम्मिलित की गई (कुल 41 सबद), लेकिन 21वीं सदी में विशेष रूप से 2010 के बाद रविदासिया समुदाय ने स्वयं को एक स्वतंत्र धार्मिक पहचान के रूप में प्रस्तुत करना आरंभ किया। इसका मुख्य कारण था सिख धार्मिक संस्थाओं में जातिगत भेदभाव और दलित समुदाय की उपेक्षा। 2010 में '**अमृतबाणी गुरु रविदास जी**' नामक एक पृथक धार्मिक ग्रंथ को जारी करके रविदासिया सम्प्रदाय की एक पृथक और औपचारिक नींव रखी गई (Juergensmeyer, 2011)।

© Shodh Patra

इस नवनिर्मित धर्म ने सामाजिक रूप से वंचित समुदायों को एक सांस्कृतिक और धार्मिक पहचान प्रदान की, जो केवल आध्यात्मिक मुक्ति तक सीमित न होकर सामाजिक अधिकार और राजनीतिक भागीदारी की दिशा में भी प्रेरक सिद्ध हुई।

1.3 समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य

समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से देखें तो धर्म केवल एक आध्यात्मिक व्यवस्था नहीं होता, बल्कि यह समाज की संरचना, सत्ता और वर्ग-व्यवस्था को भी गहराई से प्रभावित करता है। रविदासिया सम्प्रदाय इस बात का जीवंत उदाहरण है कि किस प्रकार एक धार्मिक आंदोलन सामाजिक परिवर्तन का माध्यम बन सकता है। *Émile Durkheim* ने धर्म को सामाजिक एकजुटता का साधन माना है (Durkheim, 1912/2001)। इसी प्रकार, रविदासिया सम्प्रदाय ने सामाजिक रूप से हाशिए पर पड़े समुदायों को एकजुट करने, संगठनात्मक ढांचे प्रदान करने और आत्म-सम्मान की भावना विकसित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

1.4 दलित चेतना और आत्म-सम्मान

रविदासिया सम्प्रदाय केवल एक आध्यात्मिक आंदोलन नहीं है, यह दलित चेतना का प्रतीक भी है। यह धर्म सामाजिक समरसता और समानता की स्थापना के लिए संघर्षरत है। दलित वर्ग, जो सदियों से शोषण और भेदभाव का शिकार रहा है, अब इस धर्म के माध्यम से अपने अस्तित्व और अधिकारों की पुनः परिभाषा कर रहा है (Omvedt, 2008)। यह प्रक्रिया सामाजिक न्याय की ओर एक आवश्यक कदम मानी जा सकती है।

1.5 समकालीन सामाजिक संदर्भ

आज जब भारतीय समाज में जाति आधारित भेदभाव अब भी मौजूद है, रविदासिया सम्प्रदाय की प्रासंगिकता और बढ़ जाती है। यह धर्म न केवल धार्मिक स्वतंत्रता की मांग करता है, बल्कि सामाजिक समता, राजनीतिक भागीदारी और सांस्कृतिक पहचान की भी वकालत करता है। भारत के साथ-साथ विदेशों में बसे प्रवासी रविदासिया अनुयायियों ने भी इस आंदोलन को नया आयाम दिया है। विशेषकर यूनाइटेड किंगडम, कनाडा, अमेरिका और यूरोपीय देशों में इसके अनुयायी बड़ी संख्या में सक्रिय हैं (Tatla, 2012)।

1.6 उद्देश्य और अनुसंधान की दिशा

इस शोध का प्रमुख उद्देश्य रविदासिया सम्प्रदाय के सामाजिक आयामों का अध्ययन करना है। इसमें यह विश्लेषण किया जाएगा कि किस प्रकार यह धर्म एक सामाजिक आंदोलन के रूप में विकसित हुआ, इसकी सामाजिक संरचना कैसी है, यह जातिगत भेदभाव के विरुद्ध कैसे कार्य कर रहा है, और इसके अनुयायियों

© Shodh Patra

की सामाजिक स्थिति में क्या परिवर्तन आया है। यह अध्ययन समाजशास्त्रीय सैद्धांतिक ढांचे – जैसे कि संरचनात्मक कार्यात्मकवाद, संघर्ष सिद्धांत और प्रतीकात्मक अंतःक्रिया के आधार पर किया जाएगा।

इस प्रस्तावना से स्पष्ट होता है कि रविदासिया सम्प्रदाय केवल एक धार्मिक व्यवस्था नहीं, बल्कि एक सामाजिक परिवर्तन का आंदोलन है, जो ऐतिहासिक अन्यायों के प्रतिकार और सामाजिक पुनर्निर्माण का प्रयास है। संत रविदास की शिक्षाएँ आज भी प्रासंगिक हैं, और उनका अनुकरण करने वाले समुदाय आज एक संगठित, जागरूक और सक्रिय सामाजिक शक्ति के रूप में उभर रहे हैं।

2. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि (Historical Background)

भारत में धार्मिक आंदोलनों का इतिहास सदियों पुराना है, विशेषकर भक्ति आंदोलन, जिसने मध्यकालीन समाज को गहराई से प्रभावित किया। इसी आंदोलन के दौरान एक महान संत का उदय हुआ – **संत रविदास**। उनका जीवन, विचार और शिक्षाएं एक ऐसे युग में आईं, जब भारतीय समाज गहरे जातिवाद और सामाजिक भेदभाव से ग्रसित था।

2.1 संत रविदास का जीवन और समय

संत रविदास का जन्म 15वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में हुआ, सामान्यतः विद्वान उनकी जन्मतिथि 1377 से 1450 ईस्वी के बीच मानते हैं। उनका जन्म उत्तर प्रदेश के काशी (वर्तमान वाराणसी) में हुआ था, जो उस समय धार्मिक और सांस्कृतिक गतिविधियों का प्रमुख केंद्र था (Sharma, 2002)। संत रविदास का जन्म चमार जाति में हुआ था, जो तत्कालीन वर्ण व्यवस्था में अछूत मानी जाती थी और समाज के सबसे निचले पायदान पर स्थित थी।

उनका बचपन आर्थिक रूप से संघर्षपूर्ण था, लेकिन उन्होंने आत्मिक खोज और सामाजिक न्याय की भावना से प्रेरित होकर एक क्रांतिकारी आध्यात्मिक मार्ग चुना। उन्होंने समाज की व्याप्त असमानताओं के विरुद्ध अपनी वाणी को माध्यम बनाकर जनचेतना फैलानी शुरू की।

2.2 सामाजिक पृष्ठभूमि और भक्ति आंदोलन

15वीं शताब्दी का भारत गहरे सामाजिक और धार्मिक संकट से गुजर रहा था। ब्राह्मणवादी व्यवस्था ने निम्न जातियों को मंदिर प्रवेश, शिक्षा और सामाजिक सम्मान से वंचित कर दिया था। ऐसे समय में भक्ति आंदोलन ने एक वैकल्पिक आध्यात्मिक रास्ता प्रस्तुत किया, जो जाति और धर्म से परे केवल भक्ति पर आधारित था (Lorenzen, 1995)। संत कबीर, मीराबाई, तुलसीदास और गुरुनानक जैसे संतों के साथ संत रविदास भी इस आंदोलन के प्रमुख स्तंभ बने।

© Shodh Patra

रविदास की भक्ति निर्गुण परंपरा में आती है, जिसका अर्थ है – निराकार, निरगुण ईश्वर की उपासना। उन्होंने बाह्य पूजा, कर्मकांड और पाखंड का खंडन किया और मानवता, समानता तथा आत्मज्ञान को सर्वोच्च स्थान दिया। उनकी वाणी में समाज के दलित, पीड़ित और वंचित वर्गों की पीड़ा और उनकी मुक्ति की आकांक्षा स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है (Jodhka, 2010)।

2.3 रविदास की शिक्षाओं की प्रकृति

संत रविदास की शिक्षाएं आध्यात्मिक होने के साथ-साथ सामाजिक सुधारवादी भी थीं। उनका सबसे प्रसिद्ध कथन – *"मन चंगा तो कठौती में गंगा"* – सामाजिक व्यवस्था को सीधी चुनौती देता है। वे मानते थे कि व्यक्ति की पवित्रता उसके जन्म या जाति से नहीं, बल्कि उसके कर्म और मन की पवित्रता से निर्धारित होती है।

उनकी प्रमुख शिक्षाएं निम्नलिखित थीं:

- ईश्वर एक है और सभी में वास करता है।
- सभी मनुष्य समान हैं, कोई छोटा या बड़ा नहीं।
- जातिवाद और छुआछूत का कोई स्थान नहीं।
- सच्ची भक्ति का मार्ग आत्मा की निर्मलता से होकर जाता है।
- सेवा, विनम्रता और सच्चाई ही धर्म के मूल हैं (Zelliot, 1992)।

2.4 रविदास और सिख धर्म

संत रविदास की वाणी को गुरु ग्रंथ साहिब में भी स्थान मिला है। सिख धर्म के पाँचवें गुरु, गुरु अर्जुन देव जी ने रविदास जी के 41 शबदों को सिख धर्मग्रंथ में संकलित किया, जिससे यह स्पष्ट होता है कि रविदास की आध्यात्मिक विचारधारा को व्यापक सम्मान मिला (Oberoi, 1994)। इससे यह भी प्रमाणित होता है कि संत रविदास किसी संकीर्ण पंथ या जाति तक सीमित नहीं थे, बल्कि उनकी भक्ति सार्वभौमिक थी।

2.5 संत रविदास और दलित चेतना

ब्रिटिश काल और स्वतंत्रता के पश्चात् रविदास की शिक्षाओं को दलित आंदोलन से भी जोड़ा जाने लगा। बाबा साहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर द्वारा चलाए गए दलित मुक्ति आंदोलन में संत रविदास को एक प्रेरणास्रोत माना गया। उनकी शिक्षाओं ने दलितों को आत्मगौरव, आत्म-धर्म और सामाजिक संगठित चेतना प्रदान की (Guru, 2000)।

© Shodh Patra

20वीं सदी में कई दलित संगठनों ने रविदास मंदिरों, मेलों, और समुदायिक आयोजनों के माध्यम से अपनी धार्मिक और सामाजिक पहचान को पुनः परिभाषित किया। इसी प्रक्रिया में धीरे-धीरे "रविदासिया धर्म" की अवधारणा ने जन्म लिया।

2.6 रविदासिया सम्प्रदाय की उत्पत्ति

21वीं शताब्दी की शुरुआत में संत रविदास के अनुयायियों ने एक पृथक धार्मिक पहचान की मांग की। इसका मुख्य कारण सिख धर्म और डेरों (विशेषकर डेरा सचखंड बल्लां) के बीच बढ़ती वैचारिक दूरी थी। वर्ष 2009 में, वियना (ऑस्ट्रिया) में डेरा सचखंड बल्लां के संत रामानंद की हत्या के बाद यह आंदोलन और तेज़ हुआ। इस घटना ने रविदासिया समुदाय को अपनी धार्मिक पहचान को पुनर्स्थापित करने के लिए प्रेरित किया (Juergensmeyer, 2011)।

2010 में, रविदासिया सम्प्रदाय को औपचारिक रूप से घोषित किया गया, और *"अमृतबाणी गुरु रविदास जी"* नामक ग्रंथ को धर्मग्रंथ के रूप में स्वीकार किया गया। इस ग्रंथ में केवल संत रविदास की वाणी है, जिसे अब धार्मिक समारोहों, मंदिरों और सत्संगों में पढ़ा जाता है। इसी के साथ रविदासिया सम्प्रदाय एक स्वतंत्र धर्म के रूप में स्थापित हुआ, जिसका आधार समाज के दलित वर्गों की आत्म-धार्मिक चेतना है।

रविदासिया सम्प्रदाय का ऐतिहासिक विकास केवल धार्मिक नहीं बल्कि गहराई से सामाजिक क्रांति से जुड़ा है। संत रविदास ने अपनी वाणी के माध्यम से उस समाज को चेताया जो जातीय भेदभाव, छुआछूत और सामाजिक अन्याय से ग्रस्त था। उन्होंने ऐसे समय में समानता, स्वतंत्रता और भाईचारे की बात की, जब यह विचार क्रांतिकारी थे। उनकी शिक्षाएं आज भी दलित चेतना, आत्मसम्मान और सामाजिक न्याय के लिए मार्गदर्शक बनी हुई हैं।

रविदासिया सम्प्रदाय का निर्माण इन ऐतिहासिक अनुभवों का समेकन है, जिसने समाज के एक महत्वपूर्ण वर्ग को धार्मिक ही नहीं, बल्कि सामाजिक पहचान भी प्रदान की है।

3. रविदासिया सम्प्रदाय का उद्भव और स्वरूप

3.1 परिचय

रविदासिया सम्प्रदाय का उद्भव एक सामाजिक-धार्मिक आंदोलन के रूप में हुआ, जिसका मुख्य उद्देश्य जातिगत भेदभाव और सामाजिक असमानता के विरुद्ध प्रतिरोध करना था। यह धर्म संत रविदास की शिक्षाओं पर आधारित है, जिन्होंने 15वीं शताब्दी में भक्ति आंदोलन के दौरान सामाजिक न्याय और समानता का संदेश दिया। उनके अनुयायियों ने उनके विचारों को केवल धार्मिक साधना तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे सामाजिक संगठन और पहचान का भी माध्यम बनाया। समय के साथ, यह विचारधारा एक पृथक धर्म के रूप में उभरी जिसे आज हम रविदासिया सम्प्रदाय के नाम से जानते हैं (Ram, 2011)।

© Shodh Patra

3.2 संत रविदास: एक वैचारिक आधार

संत रविदास (लगभग 1450–1520 ई.) का जन्म वाराणसी में एक चमार परिवार में हुआ था। वे उस समय की सामाजिक संरचना में 'अछूत' माने जाते थे। उन्होंने अपने जीवन और वाणी के माध्यम से समाज में व्याप्त जातिवाद, छुआछूत और धार्मिक पाखंड के विरुद्ध आवाज़ उठाई। उनका मानना था कि ईश्वर सबमें समान रूप से विद्यमान है और जाति, धर्म, रंग या लिंग के आधार पर कोई भेद नहीं होना चाहिए (Zelliot, 2005)।

संत रविदास की वाणियाँ इतनी प्रभावशाली थीं कि सिखों के पवित्र ग्रंथ *गुरु ग्रंथ साहिब* में भी उनकी 41 रचनाएँ सम्मिलित की गई हैं। हालांकि वे स्वयं को किसी सीमित पंथ या संप्रदाय में नहीं बाँधते थे, लेकिन उनकी शिक्षाओं ने विशेष रूप से चमार समुदाय को धार्मिक और सामाजिक चेतना से संपन्न किया (Juergensmeyer, 1988)।

3.3 रविदासिया सम्प्रदाय का ऐतिहासिक विकास

रविदासिया सम्प्रदाय की औपचारिक पहचान 21वीं सदी के प्रारंभिक दशकों में सामने आई, जब रविदास अनुयायियों ने स्वयं को एक अलग धार्मिक इकाई के रूप में संगठित करना आरंभ किया। इस प्रक्रिया का प्रमुख मोड़ वर्ष 2009-2010 में आया, जब ऑस्ट्रिया के वियना शहर में *डेरा सचखंड बल्लां* के प्रमुख संत निरंजन दास पर हमला हुआ, जिसमें उनके सहयोगी संत रामानंद की मृत्यु हो गई (Singh, 2012)। इस घटना ने रविदास अनुयायियों को गहराई से झकझोर दिया और उन्होंने अपनी धार्मिक पहचान को स्पष्ट रूप से अलग करने का निर्णय लिया।

इसके परिणामस्वरूप 30 जनवरी 2010 को जालंधर (पंजाब) में *अमृतबाणी गुरु रविदास जी* नामक ग्रंथ को आधिकारिक रूप से धर्मग्रंथ के रूप में स्वीकार करते हुए रविदासिया सम्प्रदाय की स्वतंत्र पहचान घोषित की गई (Ram, 2011)। इस धर्मग्रंथ में केवल संत रविदास की वाणियाँ सम्मिलित हैं, जिससे यह अन्य धर्मग्रंथों से भिन्न हो जाता है, जैसे कि सिखों का गुरु ग्रंथ साहिब।

3.4 धार्मिक स्वरूप और विश्वास प्रणाली

रविदासिया सम्प्रदाय के अनुयायी एक ईश्वर में विश्वास करते हैं, जिसे वे 'हरि', 'राम', या 'सच्चा साहिब' जैसे नामों से पुकारते हैं। यह धर्म निर्गुण भक्ति पर आधारित है, जिसमें मूर्ति पूजा, कर्मकांड और पुरोहितवाद का विरोध किया गया है। संत रविदास की शिक्षाएँ ब्रह्मा, विष्णु, महेश जैसे पारंपरिक देवताओं से हटकर एक निराकार परमात्मा की उपासना पर बल देती हैं (Omvedt, 2008)।

धर्म की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं:

© Shodh Patra

1. **अमृतबाणी**: यह धर्म का मूल ग्रंथ है, जिसमें संत रविदास के 140 से अधिक पद शामिल हैं। इसका पाठ सामूहिक रूप से सत्संग और समारोहों में किया जाता है।
2. **गुरु परंपरा**: यद्यपि संत रविदास को एकमात्र गुरु माना जाता है, परंतु विभिन्न डेरों के संत भी मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। विशेषतः *डेरा सचखंड बल्लां* को इस धर्म का मुख्य केंद्र माना जाता है।
3. **सामूहिक उपासना और लंगर**: रविदास मंदिरों में सामूहिक भजन, कीर्तन और लंगर की परंपरा है, जो समानता और सेवा का प्रतीक है (Jodhka & Dogra, 2018)।
4. **धार्मिक प्रतीक**: रविदासिया सम्प्रदाय का प्रतीक 'हरि' शब्द और 'निशान साहिब' है, जो नीले रंग के ध्वज पर अंकित होता है।

3.5 सामाजिक और सांस्कृतिक स्वरूप

रविदासिया सम्प्रदाय की विशेषता यह है कि यह केवल आध्यात्मिकता तक सीमित नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का भी माध्यम है। यह धर्म अनुसूचित जातियों, विशेषतः चमार समुदाय के लिए आत्मसम्मान, संगठितता और सामाजिक सहभागिता का स्रोत बन गया है। विवाह, मृत्यु और अन्य सामाजिक क्रियाओं में रविदासिया रीति-रिवाजों का प्रचलन बढ़ा है।

विदेशों में बसे रविदासिया समुदाय ने भी इस धर्म को अपनी पहचान का माध्यम बनाया है। यूनाइटेड किंगडम, कनाडा, अमेरिका और यूरोपीय देशों में अनेक रविदास मंदिर और संगठन स्थापित किए गए हैं, जो अपनी धार्मिक और सांस्कृतिक विरासत को आगे बढ़ा रहे हैं (Tatla, 2006)।

3.6 अन्य धर्मों से भिन्नता

रविदासिया सम्प्रदाय की उत्पत्ति सिख धर्म के समानांतर हुई है, विशेषतः इसलिए क्योंकि संत रविदास की वाणियाँ गुरु ग्रंथ साहिब में भी सम्मिलित हैं। किंतु रविदासिया अनुयायियों का मानना है कि उनकी धार्मिक पहचान सिखों से अलग है, क्योंकि वे केवल संत रविदास की शिक्षाओं को ही अपने मार्गदर्शक के रूप में स्वीकार करते हैं। गुरु परंपरा, पवित्र ग्रंथ, पूजा-पद्धति और संगठनात्मक ढाँचे में यह धर्म सिख धर्म, हिन्दू धर्म और बौद्ध धर्म से स्पष्ट रूप से भिन्न है (Singh & Barrier, 1995)।

3.7 धार्मिक संगठन और नेतृत्व

डेरा सचखंड बल्लां, पंजाब के जालंधर जिले में स्थित, रविदासिया सम्प्रदाय का सबसे बड़ा धार्मिक केंद्र है। यही संस्था धार्मिक, सामाजिक और शैक्षणिक कार्यों का संचालन करती है। इसके अतिरिक्त अनेक अन्य डेरों और मंदिरों का नेटवर्क भारत और विदेशों में फैला हुआ है। ये संगठन धर्म के प्रचार, शिक्षा, चिकित्सा, और सामाजिक सहयोग में सक्रिय हैं।

© Shodh Patra

रविदासिया सम्प्रदाय एक ऐसा सामाजिक-धार्मिक आंदोलन है जिसने सदियों से पीड़ित दलित समुदाय को न केवल आध्यात्मिक शांति, बल्कि सामाजिक शक्ति और संगठितता प्रदान की है। इसकी जड़ें संत रविदास की निर्गुण भक्ति, समता और मानवता के विचारों में गहराई से जुड़ी हैं। इसका पृथक धार्मिक स्वरूप 21वीं सदी की पहचान, संघर्ष और अस्मिता का प्रमाण है। यह धर्म भारत के दलित समुदायों के लिए सांस्कृतिक जागरण और आत्म-गौरव का माध्यम बन चुका है।

4. सामाजिक संरचना एवं संगठन (Social Structure and Organization)

रविदासिया सम्प्रदाय की सामाजिक संरचना एवं संगठन का विश्लेषण करते समय हमें यह समझना आवश्यक है कि यह धर्म एक धार्मिक पंथ मात्र नहीं है, बल्कि यह एक सामाजिक आंदोलन भी है। इसकी उत्पत्ति ऐतिहासिक रूप से शोषित, वंचित और बहिष्कृत समुदायों में हुई है, जिन्होंने संत रविदास की शिक्षाओं में एक वैकल्पिक सामाजिक संरचना और सम्मानजनक जीवन की आशा देखी।

4.1 जातिगत पृष्ठभूमि और सामाजिक स्तरीकरण

भारतीय समाज पारंपरिक रूप से जाति-आधारित संरचना पर आधारित रहा है, जिसमें शूद्र और दलित समुदायों को सामाजिक रूप से निम्न स्थान पर रखा गया (Jodhka, 2010)। संत रविदास स्वयं चमार जाति से थे, जिन्हें पारंपरिक समाज में अछूत माना जाता था। उनके अनुयायियों ने उनकी शिक्षाओं में आत्म-सम्मान, सामाजिक समानता और धार्मिक आत्मनिर्भरता की प्रेरणा पाई।

रविदासिया सम्प्रदाय के अनुयायी मुख्यतः अनुसूचित जातियों से आते हैं, जिनमें चमार, रविदासी, रामदासी, अद्धर्मी और कुछ अन्य उपजातियाँ शामिल हैं। यह समुदाय ऐतिहासिक रूप से सामाजिक वंचना, छुआछूत, शिक्षा में पिछड़ापन और आर्थिक विषमता से पीड़ित रहा है (Sharma, 2002)। रविदासिया सम्प्रदाय ने इन्हीं जातीय समूहों को संगठित कर एक धार्मिक और सामाजिक पहचान प्रदान की है।

4.2 संगठनात्मक ढांचा और धार्मिक केंद्र

रविदासिया समुदाय ने एक सशक्त धार्मिक और सामाजिक संगठनात्मक ढांचे का विकास किया है, जिसमें प्रमुख भूमिका निभाता है – **"Dera Sachkhand Ballan"**। यह डेरा पंजाब के जालंधर जिले में स्थित है और आज इसे रविदासिया सम्प्रदाय का प्रमुख धार्मिक एवं प्रशासनिक केंद्र माना जाता है (Deo, 2016)। डेरा न केवल आध्यात्मिक केंद्र के रूप में कार्य करता है, बल्कि सामुदायिक एकता, शिक्षा, चिकित्सा, और सामाजिक उत्थान के कार्यक्रम भी संचालित करता है।

2009 में डेरा सचखंड के संत रामानंद की हत्या के बाद, रविदासिया समुदाय में अपने धार्मिक अधिकारों और पहचान को लेकर एक आंदोलन आरंभ हुआ। इसका परिणाम यह हुआ कि 2010 में "अमृतबाणी गुरु

© Shodh Patra

रविदास जी" ग्रंथ को आधिकारिक धार्मिक ग्रंथ घोषित कर रविदासिया सम्प्रदाय को सिख धर्म से पृथक पहचान दी गई (Juergensmeyer, 2011)। यह घटना संगठनात्मक दृष्टिकोण से अत्यंत महत्वपूर्ण थी, क्योंकि इसने रविदासियों को एक स्वतन्त्र धार्मिक ढांचे के साथ एकजुट कर दिया।

4.3 सामाजिक संस्थाएँ और सामुदायिक गतिविधियाँ

रविदासिया सम्प्रदाय में संगठनात्मक संरचना केवल धार्मिक डेरों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह व्यापक सामाजिक संस्थाओं और समुदाय-आधारित संगठनों में भी परिलक्षित होती है। इन संस्थाओं की भूमिका निम्नलिखित क्षेत्रों में स्पष्ट होती है:

- **शिक्षा और जागरूकता :** रविदासिया समुदाय के कई डेरों और संगठनों द्वारा शिक्षा को प्राथमिकता दी गई है। उन्होंने स्कूल, कॉलेज और छात्रावास स्थापित किए हैं जो विशेष रूप से दलित समुदाय के बच्चों को शिक्षा उपलब्ध कराते हैं (Narayan, 2009)। इसके अतिरिक्त, प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी, छात्रवृत्तियाँ, और व्यावसायिक प्रशिक्षण जैसे कार्यक्रम भी चलाए जा रहे हैं।
- **स्वास्थ्य और सामाजिक कल्याण :** धार्मिक संगठनों द्वारा स्वास्थ्य शिविर, मुफ्त चिकित्सा सुविधा, रक्तदान शिविर और वृद्धाश्रम जैसे कार्य भी किए जाते हैं। ये कार्य न केवल सेवा की भावना को दर्शाते हैं, बल्कि समाज के उन वर्गों को लाभ पहुँचाते हैं जो पारंपरिक स्वास्थ्य सुविधाओं से वंचित रहते हैं (Sharma & Sharma, 2017)।
- **सामूहिक समारोह और मेल-जोल :** रविदास जयंती, अमृतबाणी का पाठ, लंगर सेवा और सत्संग जैसी गतिविधियाँ सामाजिक संगठन को सुदृढ़ करती हैं। इन आयोजनों में अनुयायी सामूहिक रूप से भाग लेते हैं, जिससे उनमें भाईचारा, एकता और सामूहिक पहचान की भावना उत्पन्न होती है। यह समाजशास्त्र के संदर्भ में "Collective Effervescence" (Durkheim, 1912/2001) का प्रतीक है, जहाँ सामूहिक धार्मिक भावनाएँ सामाजिक एकता को बल प्रदान करती हैं।

4.4 विदेशों में संगठन और प्रवासी नेटवर्क

रविदासिया सम्प्रदाय केवल भारत तक सीमित नहीं है। यह धर्म विश्व के कई देशों, विशेषतः **यूके, कनाडा, अमेरिका, जर्मनी और इटली** में भी फैला है। प्रवासी रविदासिया समुदाय ने वहां भी मंदिर, डेरों और सांस्कृतिक संगठन स्थापित किए हैं।

विदेशों में बसे रविदासियों ने अपने धर्म को सशक्त रूप में प्रस्तुत किया है। वे सामाजिक मीडिया, वेबसाइट, और डिजिटल संसाधनों के माध्यम से न केवल अपने धर्म का प्रचार करते हैं, बल्कि भारत में हो रहे सामाजिक आंदोलनों को भी समर्थन देते हैं (Judge, 2014)। प्रवासी संगठन अक्सर भारत में आर्थिक सहायता, शिक्षा के लिए फंड और चिकित्सा कार्यक्रमों में योगदान करते हैं।

© Shodh Patra

4.5 नेतृत्व और पंथीय संगठन

रविदासिया सम्प्रदाय में पारंपरिक धर्मों की तरह कोई केंद्रीकृत पैगंबर या "गुरु परंपरा" नहीं है, परंतु डेरों और संतों को व्यापक सम्मान प्राप्त है। इन संतों की भूमिका मार्गदर्शक, आयोजक और धर्मप्रचारक के रूप में होती है।

संत निरंजन दास, जो डेरा सचखंड बल्लन के प्रमुख संत रहे, उन्होंने रविदासिया सम्प्रदाय की अलग पहचान की स्थापना में मुख्य भूमिका निभाई (Juergensmeyer, 2011)। यह नेतृत्व धार्मिक और सामाजिक दिशा देने का कार्य करता है तथा समुदाय को संगठित रखता है।

4.6 सामाजिक गतिशीलता और पहचान की राजनीति

रविदासिया सम्प्रदाय ने दलित समुदाय के भीतर एक सकारात्मक सामाजिक गतिशीलता (social mobility) उत्पन्न की है। इस धर्म की सामाजिक संरचना उस पारंपरिक जाति पदानुक्रम को चुनौती देती है जो सदियों से भारत में व्याप्त रही है (Omvedt, 2006)। रविदासिया समुदाय अब न केवल अपनी धार्मिक पहचान पर गर्व करता है, बल्कि सामाजिक-राजनीतिक मंचों पर अपनी भूमिका को भी सशक्त कर रहा है।

रविदासिया सम्प्रदाय के संगठन अब राजनीतिक भागीदारी में भी सक्रिय हो गए हैं, जहाँ वे अपने समुदाय के अधिकारों, आरक्षण, सामाजिक सुरक्षा और प्रतिनिधित्व की मांग करते हैं। यह धर्म अब केवल एक अध्यात्मिक विचार नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय और पहचान की राजनीति का उपकरण भी बन चुका है।

रविदासिया सम्प्रदाय की सामाजिक संरचना न केवल धार्मिक आस्था पर आधारित है, बल्कि यह एक गहराई से जुड़ा हुआ सामाजिक आंदोलन है। इसकी संगठनात्मक संरचना ने एक हाशिए पर रहे समुदाय को संगठित, सशक्त और आत्म-सम्मानी बनाया है। डेरों, मंदिरों, प्रवासी नेटवर्क और सामुदायिक संस्थानों ने रविदासियों को न केवल धार्मिक परिप्रेक्ष्य में जोड़ा, बल्कि सामाजिक, शैक्षिक और राजनीतिक क्षेत्रों में भी सशक्त किया।

यह संरचना भारत के सामाजिक न्याय आंदोलनों में एक प्रेरक उदाहरण के रूप में देखी जा सकती है, जिसमें धर्म, संगठन और सामाजिक परिवर्तन की धाराएँ एक साथ प्रवाहित होती हैं।

5. सांस्कृतिक पहलू

रविदासिया सम्प्रदाय न केवल एक धार्मिक पहचान है, बल्कि यह अपने अनुयायियों के लिए सांस्कृतिक जागरूकता, आत्मसम्मान और सामूहिकता की भावना का भी वाहक है। इसकी संस्कृति संत रविदास की शिक्षाओं, उनकी वाणी, सामूहिक अनुष्ठानों, मंदिरों, प्रतीकों और पारंपरिक आयोजनों पर आधारित है। यह

© Shodh Patra

अनुभूति केवल धार्मिक नहीं है, बल्कि एक सामाजिक और सांस्कृतिक आंदोलन के रूप में भी देखी जाती है जो भारत और प्रवासी समुदायों में समान रूप से जीवित है।

5.1. संत रविदास की वाणी और भक्ति परंपरा

रविदासिया संस्कृति की नींव संत रविदास की वाणी पर आधारित है। उनकी वाणी, जो "अमृतबाणी गुरु रविदास जी" में संकलित है, धर्म के अनुयायियों के लिए आध्यात्मिक मार्गदर्शन का स्रोत है। यह वाणी सामाजिक समानता, आध्यात्मिक भक्ति, जातिवाद विरोध और कर्म की प्रधानता की ओर संकेत करती है (Sharma, 2012)। रविदास के भक्ति गीतों को सामूहिक सत्संगों, भजन संध्या और गुरुपर्व के अवसरों पर गाया जाता है, जिससे समुदाय में एकता और भक्ति भावना उत्पन्न होती है।

संत रविदास की वाणी का सांस्कृतिक प्रभाव इतना गहरा है कि उनके अनुयायी न केवल धार्मिक अनुष्ठानों में, बल्कि दैनिक जीवन में भी उनकी शिक्षाओं का पालन करते हैं। "मन चंगा तो कठौती में गंगा" जैसी उक्तियाँ रविदासिया अनुयायियों की जीवन शैली का हिस्सा बन चुकी हैं (Kumar, 2018)।

5.2. रविदास मंदिरों की भूमिका

रविदास मंदिर रविदासिया संस्कृति का केंद्र होते हैं। ये मंदिर न केवल पूजा स्थलों के रूप में कार्य करते हैं, बल्कि सामाजिक मेलजोल, सांस्कृतिक कार्यक्रमों और सामुदायिक विमर्श के स्थान भी होते हैं। पंजाब, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, और विदेशों (विशेषतः ब्रिटेन, कनाडा और अमेरिका) में सैकड़ों रविदास मंदिर स्थापित हैं (Singh, 2015)। ये मंदिर अमृतबाणी का पाठ, लंगर सेवा और सामाजिक आयोजनों के माध्यम से धर्म को जीवंत बनाए रखते हैं।

इन मंदिरों में हर रविवार को सत्संग और भजन कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, जिनमें बच्चे, युवा और बुज़ुर्ग मिलकर भाग लेते हैं। इस प्रक्रिया से न केवल धार्मिक ज्ञान का प्रचार होता है, बल्कि रविदासिया पहचान भी सशक्त होती है।

5.3. प्रतीकात्मक संस्कृति: झंडा, अमृतबाणी और चित्र

रविदासिया सम्प्रदाय ने अपनी एक विशिष्ट प्रतीकात्मक संस्कृति विकसित की है। धर्म का ध्वज (झंडा), जिसे "निशान साहिब" कहा जाता है, नीले रंग का होता है जिस पर "हरि" का चिह्न अंकित होता है। यह झंडा सभी रविदास मंदिरों के ऊपर लगाया जाता है और धार्मिक कार्यक्रमों के दौरान गर्व से लहराया जाता है (Deol, 2020)।

"अमृतबाणी गुरु रविदास जी" को धर्म का आधिकारिक ग्रंथ माना जाता है। इसे बड़े सम्मान के साथ गुरु आसन पर रखा जाता है और अनुयायी इसे झुककर प्रणाम करते हैं। संत रविदास के चित्र भी सांस्कृतिक रूप

© Shodh Patra

से अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं। उन्हें पारंपरिक पोशाक में दिखाया जाता है—हाथ में माला और पद्मासन मुद्रा में बैठे हुए, जिससे आध्यात्मिकता का बोध होता है।

यह प्रतीक समुदाय की एकता और सांस्कृतिक गौरव का प्रतीक बन चुके हैं, जो उन्हें अन्य धर्मों से अलग पहचान प्रदान करते हैं।

5.4. रविदास जयंती और सामुदायिक उत्सव

रविदास जयंती रविदासिया समुदाय का सबसे प्रमुख उत्सव होता है, जिसे संत रविदास के जन्म दिवस के रूप में हर वर्ष माघ पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है। यह उत्सव धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। इस अवसर पर शोभायात्रा निकाली जाती है, जिसमें धर्म ध्वज, संत रविदास की झांकी और भक्ति गीतों का प्रदर्शन किया जाता है (Jodhka, 2002)।

लंगर सेवा, सामूहिक पाठ, और सांस्कृतिक कार्यक्रमों जैसे नाटक, कवि सम्मेलन और भजन गायन भी इस आयोजन का हिस्सा होते हैं। विदेशों में बसे प्रवासी रविदासिया अनुयायी भी इन आयोजनों में ऑनलाइन या भौतिक रूप से भाग लेते हैं, जिससे वैश्विक एकता का बोध होता है।

इस तरह के आयोजनों से न केवल धार्मिक भावनाओं को बल मिलता है, बल्कि यह समुदाय की सांस्कृतिक पहचान को भी मजबूत करता है।

5.5. भाषा, पोशाक और सामाजिक जीवनशैली

रविदासिया समुदाय की सांस्कृतिक अभिव्यक्ति उनकी भाषा और वेशभूषा में भी देखी जा सकती है। पंजाब में बसे अनुयायी पंजाबी भाषा में संत रविदास की वाणी का पाठ करते हैं, जबकि उत्तर प्रदेश और बिहार में हिंदी या भोजपुरी का प्रयोग होता है (Narayan, 2006)। यह भाषाई विविधता धर्म की बहुलता को दर्शाती है, लेकिन साथ ही संत रविदास की शिक्षाओं को विभिन्न क्षेत्रों में स्थानीय संस्कृति के अनुरूप आत्मसात करती है।

पारंपरिक पोशाक में पुरुष सफेद कुर्ता-पायजामा और सिर पर पटका पहनते हैं, जबकि महिलाएं सलवार-कमीज़ या साड़ी में सजी होती हैं। धार्मिक आयोजनों में विशेष पोशाक और संत रविदास के प्रतीक चिह्न वाले बैज या स्कार्फ पहने जाते हैं।

सामाजिक जीवनशैली में सामूहिकता, शाकाहार, सादगी, और सेवाभाव को प्रमुखता दी जाती है। विवाह, मृत्यु संस्कार, नामकरण आदि अवसरों पर धर्म के अनुरूप परंपराएं निभाई जाती हैं, जिनमें संत रविदास की वाणी का पाठ और लंगर का आयोजन होता है।

© Shodh Patra

5.6. प्रवासी रविदासिया समुदाय में संस्कृति का विस्तार

ब्रिटेन, कनाडा, अमेरिका और अन्य देशों में बसे रविदासिया अनुयायियों ने भी अपनी सांस्कृतिक जड़ों को बनाए रखा है। प्रवासी रविदासिया मंदिरों में हर सप्ताह सत्संग, भजन, और सामाजिक चर्चाएं होती हैं। रविदास जयंती को बड़े स्तर पर मनाया जाता है, जिसमें अन्य जातियों और धर्मों के लोग भी शामिल होते हैं। इससे एक अंतर्धार्मिक संवाद और सामाजिक समरसता का वातावरण बनता है (Tatla, 2011)।

इन प्रवासी समुदायों ने डिजिटल माध्यमों—जैसे यूट्यूब चैनल, वेबसाइट्स और फेसबुक पेज के माध्यम से भी रविदासिया संस्कृति का प्रचार-प्रसार किया है। इससे युवा पीढ़ी को अपनी सांस्कृतिक विरासत से जोड़ने में सहायता मिली है।

रविदासिया सम्प्रदाय की सांस्कृतिक विशेषताएं केवल धार्मिक अनुष्ठानों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे एक सामाजिक पहचान, सामूहिक आत्म-सम्मान, और संघर्षशील इतिहास का प्रतिनिधित्व करती हैं। संत रविदास की शिक्षाओं, मंदिरों की भूमिका, सामूहिक उत्सवों, प्रतीकों और भक्ति संगीत के माध्यम से यह धर्म अपने अनुयायियों को एक जीवंत और संगठित सांस्कृतिक आधार प्रदान करता है। यह संस्कृति दलित चेतना की अभिव्यक्ति है, जो सामाजिक बदलाव की दिशा में एक सशक्त माध्यम बन चुकी है।

6. आधुनिक चुनौतियाँ एवं संघर्ष (Modern Challenges and Conflicts)

रविदासिया सम्प्रदाय आज के समय में एक अलग धार्मिक और सामाजिक पहचान के रूप में उभरा है, जो विशेष रूप से दलित समुदाय के सामाजिक उत्थान, समानता और आत्म-सम्मान से जुड़ा हुआ है। हालांकि इस धर्म ने हाशिये पर रहे समुदायों को एकजुट कर उन्हें धार्मिक और सामाजिक आधार प्रदान किया है, फिर भी यह कई आधुनिक चुनौतियों और संघर्षों से जूझ रहा है। इन संघर्षों को व्यापक रूप से सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक और आर्थिक स्तरों पर देखा जा सकता है। इस खंड में हम इन्हीं चुनौतियों का विस्तार से समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से विश्लेषण करेंगे।

6.1. धार्मिक पहचान का संकट

रविदासिया सम्प्रदाय की सबसे बड़ी चुनौती उसकी **धार्मिक पहचान** को लेकर है। चूंकि संत रविदास की वाणी सिख धर्म के *गुरु ग्रंथ साहिब* में भी सम्मिलित है, इसलिए रविदासिया अनुयायी लंबे समय तक खुद को सिख धर्म का हिस्सा मानते रहे। परंतु 2009 में *डेरा सचखंड बल्लां*, जालंधर के संत रामानंद की ऑस्ट्रिया में हत्या के बाद, रविदासिया समुदाय में एक अलग धार्मिक पहचान की माँग तेज हुई (Judge, 2015)। इस घटना ने यह स्पष्ट किया कि रविदासिया अनुयायियों को पारंपरिक सिख ढाँचे में पर्याप्त प्रतिनिधित्व या सम्मान नहीं मिल रहा था।

© Shodh Patra

2010 में रविदासिया सम्प्रदाय को औपचारिक रूप से स्वतंत्र धर्म के रूप में स्थापित किया गया और *अमृतबाणी गुरु रविदास जी* को धार्मिक ग्रंथ के रूप में स्वीकारा गया। इस बदलाव के बाद समुदाय ने अपने पूजा स्थलों में *गुरु ग्रंथ साहिब* के स्थान पर *अमृतबाणी* स्थापित करना शुरू किया (Nesbitt, 2016)। यह परिवर्तन कई सिख संगठनों को असहज लगा, जिससे टकराव की स्थिति बनी। इस पहचान संघर्ष ने रविदासिया समुदाय को धार्मिक रूप से अस्थिरता की स्थिति में डाल दिया।

6.2. जातीय भेदभाव और सामाजिक अस्वीकार्यता

भारत में जातिवाद एक गहरी सामाजिक बुराई है, और रविदासिया सम्प्रदाय की उत्पत्ति ही जातिवादी उत्पीड़न के विरोध में हुई है। हालांकि संवैधानिक रूप से जातिगत भेदभाव निषिद्ध है, फिर भी **अनुसूचित जातियों**, विशेषकर चमार जाति से जुड़े रविदासिया अनुयायियों को आज भी समाज के विभिन्न हिस्सों में अस्पृश्यता, सामाजिक बहिष्कार और भेदभाव का सामना करना पड़ता है (Jodhka, 2012)। कई बार रविदास मंदिरों, लंगर या मेलों में उच्च जातियों द्वारा भाग न लेने की घटनाएँ सामने आई हैं।

ग्रामीण भारत में तो स्थिति और भी जटिल है जहाँ धार्मिक स्वतंत्रता के बावजूद सामूहिक सामाजिक स्वीकृति नहीं मिलती। स्कूल, शादी, पंचायत, और यहाँ तक कि श्मशान जैसी संस्थाओं में भी जाति-आधारित विभाजन दिखाई देता है। इससे रविदासिया समुदाय के युवा अक्सर आत्मसम्मान और सामाजिक सुरक्षा के बीच दुविधा में पड़ जाते हैं।

6.3. राजनीतिक उपेक्षा और उपयोग

रविदासिया सम्प्रदाय और उसके अनुयायी भारतीय राजनीति के लिए एक महत्वपूर्ण **वोट बैंक** बन चुके हैं, विशेषतः पंजाब, उत्तर प्रदेश और हरियाणा में। राजनीतिक दल अक्सर रविदास जयंती, मंदिरों के दौरे और समुदाय-विशिष्ट योजनाओं के माध्यम से इस समुदाय को लुभाने की कोशिश करते हैं (Sharma, 2020)। हालांकि, यह समर्थन अक्सर **मौसमी** और **प्रचारात्मक** होता है, वास्तविक नीतिगत सुधार और सामाजिक समावेशन की दिशा में ठोस कदम नहीं उठाए जाते।

राजनीतिक दलों द्वारा समुदाय की भावना का उपयोग तो किया जाता है, परन्तु उनके मुद्दों को संसद या विधानसभाओं में उचित प्रतिनिधित्व नहीं मिलता। इससे समुदाय में **राजनीतिक असंतोष** और **विकास से वंचित रहने की भावना** गहराती जा रही है।

6.4. शिक्षा और आर्थिक पिछड़ापन

रविदासिया समुदाय, जो ऐतिहासिक रूप से समाज के सबसे हाशिये पर रहा है, आज भी **शिक्षा और आर्थिक विकास** में पिछड़ा हुआ है। कई अध्ययनों से पता चला है कि इस समुदाय के बच्चों की **स्कूल ड्रॉपआउट दर** अधिक है और उच्च शिक्षा में इनकी भागीदारी अपेक्षाकृत कम है (Thorat & Newman,

© Shodh Patra

2012)। आर्थिक रूप से भी यह समुदाय मुख्यतः असंगठित क्षेत्र, चमड़ा उद्योग, खेतिहर मजदूरी और दिहाड़ी मजदूरी में संलग्न रहता है।

आधुनिक बाज़ार अर्थव्यवस्था और डिजिटल क्रांति के युग में इस समुदाय के पास संसाधनों, सूचना और अवसरों की भारी कमी है। सरकारी योजनाएँ जैसे *प्रधानमंत्री आवास योजना, स्किल इंडिया* आदि का लाभ इस समुदाय तक सीमित मात्रा में पहुँचता है, जिससे इनका **सामाजिक-आर्थिक सशक्तिकरण** बाधित होता है।

6.5. प्रवासी रविदासिया समाज की समस्याएँ

विशेष रूप से यूके, कनाडा, और अमेरिका में बसे **प्रवासी रविदासिया समुदाय** ने अपनी अलग पहचान और संगठनात्मक ढांचा विकसित किया है। डेरा सचखंड के अंतरराष्ट्रीय केंद्र, गुरुद्वारे और संगठन वहाँ सक्रिय हैं। हालांकि, वहाँ भी पहचान का संकट है। प्रवासी युवाओं में रविदासिया सम्प्रदाय की परंपराओं के प्रति समझ और प्रतिबद्धता कम हो रही है (Tatla, 2017)।

इसके साथ ही, बहुसांस्कृतिक समाजों में जातिगत पहचान के कारण कई बार सामाजिक असहजता उत्पन्न होती है। प्रवासी रविदासिया अनुयायी अपने धर्म को बनाए रखने और मुख्यधारा से जुड़ने के बीच संघर्ष करते हैं।

6.6. आंतरिक विभाजन और नेतृत्व संकट

रविदासिया समुदाय में एक और प्रमुख चुनौती है – **आंतरिक एकता की कमी**। विभिन्न क्षेत्रीय डेरों, मंदिरों और नेताओं के बीच विचारधारात्मक एवं प्रशासनिक मतभेद उत्पन्न हो चुके हैं। *डेरा बल्लां* को केंद्रीय संस्था माना जाता है, परंतु हर क्षेत्र में उसके प्रभाव की सीमा अलग-अलग है। इससे समुदाय में संगठनात्मक कमजोरी और नेतृत्व संकट पैदा होता है, जो दीर्घकालिक सामाजिक आंदोलनों को बाधित करता है (Singh, 2019)।

रविदासिया सम्प्रदाय आधुनिक भारत में एक सशक्त सामाजिक चेतना और धार्मिक अस्मिता का प्रतीक बनकर उभरा है। फिर भी इसकी यात्रा अभी तक सरल नहीं रही है। धार्मिक पहचान का संकट, जातिवादी सामाजिक ढाँचा, राजनीतिक दोहन, शिक्षा एवं आर्थिक पिछड़ापन तथा प्रवासी संकट – ये सभी चुनौतियाँ इसे लगातार संघर्ष की स्थिति में रखे हुए हैं।

इन संघर्षों से निपटने के लिए एक समन्वित रणनीति की आवश्यकता है, जिसमें सरकारी योजनाओं की प्रभावी पहुँच, सामाजिक चेतना का विस्तार, राजनीतिक भागीदारी, शिक्षा में सुधार और धार्मिक एकता का समावेश हो। तभी रविदासिया सम्प्रदाय न केवल सामाजिक समानता की अवधारणाओं को जीवित रख पाएगा, बल्कि भविष्य की पीढ़ियों को भी प्रेरित कर सकेगा।

© Shodh Patra

7. निष्कर्ष

रविदासिया सम्प्रदाय भारतीय समाज में सामाजिक न्याय, आत्म-सम्मान और धार्मिक स्वतंत्रता के लिए चलाए गए आंदोलनों का एक महत्वपूर्ण उदाहरण है। यह धर्म एक ऐसा मंच प्रदान करता है, जहाँ ऐतिहासिक रूप से शोषित वर्गों को अपनी पहचान, सम्मान और सामूहिकता की अनुभूति होती है (Rawat, 2011)। संत रविदास की शिक्षाएँ केवल धार्मिक उपदेश नहीं थीं, बल्कि उन्होंने सामाजिक संरचना को चुनौती दी और एक ऐसे समतामूलक समाज की कल्पना की जहाँ सभी मनुष्य बराबर हों (Sharma, 2014)।

21वीं सदी में रविदासिया सम्प्रदाय की पृथक पहचान बनना इस बात का प्रमाण है कि दलित समुदाय अब केवल धार्मिक सहिष्णुता नहीं, बल्कि धार्मिक स्वायत्तता की भी माँग कर रहा है। "अमृतबाणी गुरु रविदास जी" को धर्मग्रंथ के रूप में अपनाना एक सांस्कृतिक और वैचारिक आत्मनिर्भरता की दिशा में बड़ा कदम है (Ram, 2010)। यह धर्म समुदाय को संगठनबद्ध करने, सामाजिक कुरीतियों का विरोध करने और समानता की भावना को बढ़ावा देने में सहायक रहा है।

हालाँकि, समकालीन दौर में रविदासिया समुदाय कई सामाजिक एवं राजनीतिक चुनौतियों से जूझ रहा है — जैसे कि धार्मिक पहचान का संकट, राजनीतिक शोषण, और शिक्षा व आर्थिक अवसरों की कमी (Judge, 2017)। इसलिए, यह आवश्यक है कि रविदासिया सम्प्रदाय को केवल एक धार्मिक आंदोलन न मानकर, एक सामाजिक पुनरुत्थान की प्रक्रिया के रूप में समझा जाए।

यह अध्ययन निष्कर्षतः इस बात पर बल देता है कि रविदासिया सम्प्रदाय समाज में समानता, बंधुत्व और न्याय की भावना को सुदृढ़ करता है, और इसे नकारना भारत के लोकतांत्रिक आदर्शों को कमजोर करना होगा।

8. सुझाव

रविदासिया धर्म, जो कि एक ऐतिहासिक रूप से वंचित समुदाय की धार्मिक और सामाजिक पहचान का प्रतीक बन चुका है, आज भी अनेक चुनौतियों का सामना कर रहा है। इन समस्याओं का समाधान बहुआयामी दृष्टिकोण से किया जा सकता है। निम्नलिखित सुझाव इस दिशा में सहायक हो सकते हैं:

8.1. शिक्षा के अवसरों का विस्तार

शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का सबसे प्रभावशाली माध्यम है। अनुसूचित जातियों, विशेषकर रविदासिया समुदाय के बच्चों और युवाओं के लिए गुणवत्ता-पूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करना अत्यंत आवश्यक है। इसके लिए सरकार को विशेष छात्रवृत्ति योजनाएँ, कोचिंग सेंटर और स्किल डेवलपमेंट प्रोग्राम संचालित करने

© Shodh Patra

चाहिए (Kumar, 2016)। साथ ही, समुदाय स्तर पर भी शिक्षण संस्थानों की स्थापना एवं शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाना ज़रूरी है।

8.2. धार्मिक पहचान का सम्मान और संरक्षण

रविदासिया सम्प्रदाय की पृथक धार्मिक पहचान को समाज में उचित सम्मान मिलना चाहिए। इसके अनुयायियों की धार्मिक भावनाओं का आदर करते हुए प्रशासनिक स्तर पर रविदासिया सम्प्रदाय को स्वतंत्र रूप से मान्यता देने की प्रक्रिया को सरल और निष्पक्ष बनाया जाना चाहिए (Sharma, 2020)। धार्मिक स्थल, जैसे कि डेरा सचखंड बल्लां, को संरक्षित और संवर्धित किया जाना चाहिए।

8.3. सांस्कृतिक और धार्मिक कार्यक्रमों का प्रोत्साहन

संत रविदास की जयंती, अमृतबाणी का पाठ, और लंगर जैसी सामुदायिक परंपराएं सामाजिक एकता और सांस्कृतिक चेतना को मजबूत करती हैं। ऐसे कार्यक्रमों को राज्य और स्थानीय प्रशासन द्वारा सहायता प्रदान करनी चाहिए। साथ ही, मीडिया के माध्यम से रविदासिया संस्कृति को मुख्यधारा में लाना आवश्यक है (Singh, 2018)।

8.4. राजनीतिक भागीदारी का सशक्तिकरण

रविदासिया समुदाय की राजनीतिक भागीदारी आज भी सीमित है। इसके विस्तार के लिए न केवल राजनैतिक आरक्षण की मांग की जानी चाहिए, बल्कि समुदाय के भीतर से नेतृत्व विकसित करना भी आवश्यक है। दलित राजनीति के स्वरूप को संतुलित और आत्मनिर्भर बनाना एक दीर्घकालिक समाधान हो सकता है (Jodhka, 2015)।

8.5. जातीय भेदभाव के विरुद्ध सख्त कार्रवाई

आज भी कई क्षेत्रों में रविदासिया अनुयायी सामाजिक भेदभाव का शिकार होते हैं। सरकार को अनुसूचित जातियों के विरुद्ध अपराधों पर कठोर कार्रवाई सुनिश्चित करनी चाहिए। इसके अतिरिक्त, स्कूल, कार्यस्थल और पंचायत स्तर पर सामाजिक समरसता बढ़ाने के लिए प्रशिक्षण और जागरूकता अभियान चलाए जाने चाहिए (Teltumbde, 2019)।

8.6. अंतरधार्मिक संवाद की स्थापना

सिख धर्म और रविदासिया समुदाय के बीच 2010 के बाद से धार्मिक पहचान को लेकर कई बार तनाव देखा गया है। ऐसे में संत रविदास की मूल शिक्षाओं के आधार पर प्रेम, समानता और संवाद को बढ़ावा देने की आवश्यकता है। धार्मिक सहिष्णुता के लिए पैनल, संगोष्ठियाँ और संयुक्त समुदायिक कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए (Nayar, 2012)।

© Shodh Patra

संदर्भ

- अमृतबाणी गुरु रविदास जी
- डॉ. धर्मवीर – *संत रविदास और दलित चेतना*
- जोगिंदर रावत – *रविदासिया आंदोलन का समाजशास्त्र*
- Durkheim, E. (2001). *The Elementary Forms of Religious Life* (Original work published 1912). Oxford University Press.
- Deo, A. (2016). *Religion and Politics in India: The Emergence of the Ravidassia Religion*. Journal of South Asian Studies, 39(2), 211–229.
- Deol, H. (2020). *Religion and Identity in South Asia: A Study of the Ravidassia Movement*. New Delhi: Sage Publications.
- Guru, G. (2000). *Dalit from Margin to Center*. New Delhi: Oxford University Press.
- Jodhka, S. S. (2002). *Caste and Untouchability in Rural Punjab*. Economic and Political Weekly, 37(19), 1813-1823.
- Jodhka, S. S., & Dogra, P. S. (2018). *Religious Diversities and Social Hierarchies: Identity and Assertion among Ravidassias in Punjab*. Sociological Bulletin, 67(3), 323–341.
- Jodhka, S. S. (2010). *Caste and Politics in India*. Delhi: Permanent Black.
- Jodhka, S. S. (2015). *Caste in Contemporary India*. Routledge.
- Jodhka, S. S. (2012). *Caste: Oxford India Short Introductions*. Oxford University Press.
- Jodhka, S. S. (2010). *Dalits in Business: Self-Employed Scheduled Castes in Northwest India*. EPW, 45(11), 41–48.
- Judge, P. S. (2014). *Mapping Dalit Politics in Punjab*. Indian Journal of Dalit Studies, 2(1), 13–27.
- Judge, P. S. (2017). *Religious Identity and Dalit Assertion: The Emergence of the Ravidassia Religion*. Economic and Political Weekly, 52(8), 53-59.
- Judge, P. S. (2015). *Dalits and the Making of Modern India*. Sage Publications.

© Shodh Patra

- Juergensmeyer, M. (2011). *Religious Rebels in the Punjab: The Social Vision of Untouchables*. New Delhi: Navayana.
- Juergensmeyer, M. (2011). *Rethinking Sikhism and Dalit Identity: The Ravidassia Religion*. In *Religion and Society in India*. University of California Press.
- Juergensmeyer, M. (2011). *Ravidassia Religion: Identity, Faith and Dispute*. International Journal of Punjab Studies, 18(2), 157–174.
- Juergensmeyer, M. (1988). *Radhasoami Reality: The Logic of a Modern Faith*. Princeton University Press.
- Kumar, A. (2018). *Sociology of Dalit Consciousness: The Role of Saint Ravidas*. Delhi: Rawat Publications.
- Kumar, R. (2016). *Education and Dalit Empowerment in India: Policies and Practices*. Kalpaz Publications.
- Lorenzen, D. N. (1995). *Bhakti Religion in North India: Community Identity and Political Action*. Albany: SUNY Press.
- Nesbitt, E. (2016). *Sikhism: A Very Short Introduction*. Oxford University Press.
- Narayan, B. (2006). *Women Heroes and Dalit Assertion in North India: Culture, Identity and Politics*. Sage Publications India.
- Narayan, B. (2009). *Fascinating Hindutva: Saffron Politics and Dalit Mobilisation*. Sage Publications.
- Nayar, K. (2012). *The Sikh View on Happiness: Guru Arjan's Sukhmani*. Bloomsbury.
- Omvedt, G. (2008). *Seeking Begumpura: The Social Vision of Anticaste Intellectuals*. Navayana Publishing.
- Omvedt, G. (2006). *Dalit Visions: The Anti-Caste Movement and the Construction of an Indian Identity*. Orient Blackswan.
- Oberoi, H. (1994). *The Construction of Religious Boundaries: Culture, Identity, and Diversity in the Sikh Tradition*. Chicago: University of Chicago Press.
- Sharma, A. (2002). *Ravidass: Life and Teachings*. Varanasi: Lok Bharati.

© Shodh Patra

- Sharma, A. (2002). *Bhakti Movement and Its Social Implications*. Delhi: Manohar Publishers.
- Sharma, A. (2020). *Religious Identity and Dalit Assertion: A Case Study of Ravidassia Movement*. Indian Journal of Social Research, 61(3), 45-59.
- Singh, G. (2018). *Ravidassia Dharam and the Assertion of Dalit Identity in Punjab*. Economic and Political Weekly, 53(6), 23-27.
- Sharma, K. L. (2002). *Social Stratification and Mobility*. Rawat Publications.
- Sharma, A., & Sharma, S. (2017). *Health Awareness among Dalits: A Study of Ravidassia Community*. Journal of Social Inclusion Studies, 3(1), 45–60.
- Sharma, P. (2012). *Bhakti Movement and the Rise of Ravidassia Religion*. Indian Journal of Social Studies, 45(2), 114-127.
- Singh, G. (2015). *Global Sikh Diaspora and the Politics of Identity: The Ravidassia Case*. Diaspora Studies, 8(1), 34-52.
- Singh, P., & Barrier, N. G. (1995). *Punjab: The Region, Its History and People*. Manohar Publishers.
- Singh, R. (2012). *The Ravidassia Movement in Punjab: Social Protest and Religio-Political Assertion*. International Journal of Punjab Studies, 19(1), 45–68.
- Sharma, M. (2020). *Politics of Dalit Assertion in Punjab: Understanding the Dynamics*. Economic and Political Weekly, 55(36).
- Singh, G. (2019). *Ravidassia Identity and Dalit Assertion*. Journal of Punjab Studies, 26(1–2), 89–105.
- Sharma, A. (2014). *Dalit Theology and Social Liberation: Problems, Perspectives, and Prospects*. Oxford University Press.
- Ram, R. (2011). *Ravidass Deras and Social Protest: Making Sense of Dalit Religious Identity*. Economic and Political Weekly, 46(11), 70–77.
- Ram, R. (2010). *Ravidass Deras and Social Protest: Making Sense of Dalit Religion*. Economic and Political Weekly, 45(5), 49-55.
- Rawat, R. S. (2011). *Forgotten Citizens: Dalit and the Making of the Modern Indian State*. Cambridge: Cambridge University Press.

© Shodh Patra

- Thorat, S., & Newman, K. S. (2012). *Blocked by Caste: Economic Discrimination in Modern India*. Oxford University Press.
- Tatla, D. S. (2017). *The Sikh Diaspora: The Search for Statehood*. Routledge.
- Tatla, D. S. (2006). *The Politics of Homeland: A Study of the Ravidassia Diaspora*. South Asian Diaspora, 1(1), 25–41.
- Tatla, D. S. (2011). *Ravidassia Diaspora and Religious Assertion in the UK*. Journal of Punjab Studies, 18(1), 45-66.
- Tatla, D. S. (2012). *The Transnational Ravidassia Diaspora: Religion, Identity and Assertion*. South Asia Research, 32(1), 1–23.
- Teltumbde, A. (2019). *Republic of Caste: Thinking Equality in the Time of Neoliberal Hindutva*. Navayana.
- Zelliot, E. (1992). *From Untouchable to Dalit: Essays on the Ambedkar Movement*. New Delhi: Manohar Publishers.

© Shodh Patra